desumta, continent: 1. Foll. 104–114. Lib. XVII, 1–77. 2. Foll. 115–117. Lib. XVIII, 34. ad finem libri. 3. Foll. 118–126. Lib. XIX, 1–45. 4. Foll. 127, 128. Lib. XVI, 16–33. 5. Foll. 129, 130. Lib. XVI, 39–52. 6. Foll. 131, 132. Lib. XVI, 83–XVIII, 3. 7. Foll. 133–141. Lib. VII, 3. ad finem libri. 9. Foll. 143–171. Lib. XVI, 87. ad finem Raghuvanṣae. Haec pars anno 1622 exarata est.

Praeter optimam Stenzleri editionem (London, 1832), Indicae plures exstant, quarum in numero, quae Calcuttae anno 1852 cum Mallináthae commentario impressa est, facile primum locum tenet.

De codicibus Parisiacis cf. Hamilton, pp. 27, 64; de Havniensi Westergaard, p. 12; de Berolinensibus Weber, p. 148. (Walker 210^{c}.)

184.

Lit. Devan. Charta Ind. Foll. 67. Long. 12. Lat. 6. Linn. num. variat.

Inest *Kálidásae Kumárasambhavas,* quo carmine epico belli numinis origo celebratur, cum *Mallináthae* commentario. (A.) Carmen olim viginti duos libros continuisse dicitur, nunc in plerisque codicibus, velut in nostro, septem tantum supersunt.

De codicum conditione idem valet, quod supra de Raghuvanṣa dictum est, non unam quandam, sed diversas textus recensiones singulis repraesentari. Quod variis lectionibus librorum primi et secundi, quos cum Stenzleri editione contuli, apparebit.

Liber I.

1. तोयनिधी C. D. E. F. विगाह्य B. D. F. Distt. 4. et 5. transponuntur in C, contra 5. et 6. in B. D. E. F. 6. छायामिषे D. F. 8^{b}. स्तानप्र° D. 9^{b}. °कंडूं B. 12. शिरसामतीव D. 13. चांद्र° B. 14. गृहद्वारि D. 16. हस्ताचरिता° F. 21. अघोपमानेन A. अयावमानेन B. pr. m. अयाप° B. s. m. 23^{a}. तूर्यस्वन° B. 24^{a}. धरित्री B. 24^{b}. वैदुर्य° A. वैदूर्य° C. वैडूर्य° E. मेघनादादु° B. 26. तपसे A. B. D. F. °संघाः C. pr. m. °संगा s. m. 30. महौषधीनि° omnes. 31^{b}. साधु वयः F. 33. अयुन्नता° F. 34. संनतांशा D. F. 34^{b}. °लब्धै° A. Distt. 35. 36. 34. in E. transponuntur. 38. नवलोमराजी D. F. Post dist. 38. hoc in C. E. inseritur: गंभीरनाभीहृदसंनिधाने रराज नीला नवरोमराजिः । सुखेंदुभीस्स्तनचक्रवाकचंचुच्युता[1] शैवलवल्लरीव ॥ Postea in E. distt. 42. 39–41. transponuntur. 39. नवयौवनस्य कामेन F. 40^{a}.

[1] भीरू pr. m. भीत s. m. C. भित E.

चारू pro पांडु D. Distt. 42. 41. in D. transponuntur. 42. Hoc distichon commentario subditicium appellatur, in ed. Calc. omissum est. 45. ताम्रौष्ठ° A. B. 46. °पुष्टाः - - °शब्दाः D. F. Post dist. 46. in E. hoc inseritur: कर्णद्वयस्थं नगराजपुत्र्यास्ताटंकयुग्मं सुतरां रराज । मत्वा भवित्रीं त्रिपुरारिपत्नीं तां सेवमानाविव पुष्पवंतौ ॥ Idem distichon in marg. cod. B. ita legitur: कर्णद्वयस्थं - - नितरां बभास । ज्ञात्वा - - सेवासमेताविव पु° ॥ In cod. C. post d. 48. legitur: ताटंकपत्रं विरराज तस्याः शैलात्मजायाः श्रवणद्वयस्थं । मत्वा भवित्रीं मदनारिपत्नीं सेवासमेताविव पुष्पवंतौ ॥ 52. °न्यतरा° B. 53. माध्यस्थ्यं E. F. 54. पूर्वं F. Mallináthas lectionem पूर्वं ज्वलने laudat. ततः प्रभृत्येव D. 55. जितात्मा A. C. et E. s. m. 57. ककुद्मान् D. F. 58. समित्समृद्धं E. तपश्चचार D. E. F.

Liber II.

5. प्रभावस्तस्य गीयते A. अदश्वरा° - गीयते D. F. A Mallinátha lectio quaedam अदश्वरा° प्रसवस्तस्य गीयते laudatur. 7. आत्मभावौ D. F. 8^{a}. °परिणामेन D. F. 8^{b}. यौ स्वप्नबोधौ तावेव भूतानां A. यौ तु स्वप्नावबोधौ तु भूतानां B. D. F. 9. अनंतो जगदंतकः A. 11. गुरुलैघु: D. 12^{a}. उद्गीथः A. B. C. 16^{a}. यथार्थ° A. B. F. 16^{b}. ब्रह्मा pro वेधाः D. F. 18. Codices et Mall. अधीकारान्, quod in textu restituendum est. 19. किमिदं A. B. et Mallin. किमिमां - - प्रभावानि D. F. °प्रभावानि pro प्रकाशानि etiam in B. C. 20. अनुन्नर्गी° D. अवगूर्णि° F. 21. अयमपि तु° B. 24. इवायाताः प्रकामालोकदर्शिनः D. इवायाताः प्रकामालोकदर्शनं F. 26. स्वतांहंकार° D. F. 27. न खलु स्य बलोत्तरैः D. F. 28. प्रार्थयध्वं omnes, necnon Mall. 29. प्रेरयामास वृत्रहा C. D. F. वृत्रहा etiam in B. 30. द्विनेत्रो (pr. m. °त्रं) चक्षुः दश्चचुशताधिकं B. द्विनेत्रो हरेश्चक्षुर्दशचक्षुःशताधिकं D. F. 31^{a}. यथात्थ A. 31^{b}. ज्ञास्यति प्रभुः A. D. F. (°सि प्रभुः F.) 32. त्वया दत्त° B. C. D. F. 33. करोति pro तनोति B. 38^{b}. वासुकिग्रहिता D. F. 39. प्रत्यहं pro तं मुहुः A. 39^{b}. स्वर्गेद्रुम° D. F. 40. प्रत्युपकारेण A. B. F. 41^{a}. हस्तैः F. 46. पिबतामा° D. F. Disticha 46. 45. 44. in C. transposita sunt. 48. नः सर्वे D. F. 49. °वार्पितः C. D. F. 53. तस्य pro तस्मिन् C. D. F. 54. सिद्धे B. D. सिद्दे F. 56. वृतस्तेनेदमेवाहं F. एवादौ B. C. 57. उद्यतं D. F. 58. प्रतिष्ठितं omnes. 59. ते यूयं C. D. F. 60. सोढुं pro वोढुं A. B. 61. वेणीबंधानदूषितान् A. 63. संसिद्धि° A. F. संसिद्धे B. कर्मसंसिद्धि° D. 64. अ स लालि° A. स pro सु etiam a Mallin. legi videtur. चारुशाङ्गे et पुष्पकेतुः D. F.

Codex anno 1827 satis accurate exaratus est. Collato commentario editioni Calcuttensi fidem nimiam non tribuendam esse vidi. (Mill 44.)